॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जन्मपत्रिका

सैम्पल

26/01/1998 04:20 AM

Kanpur,Uttar Pradesh,India

निर्मित

सनातन ज्योति

सामान्य कुंडली विवरण

सामान्य विवरण

जन्म दिनांक	26/01/1998
जन्म समय	04:20
जन्म स्थान	Kanpur,Uttar Pradesh,India
अक्षांश	26 N 26
देशांतर	80 E 19
समय क्षेत्र	+05:30
अयनांश	23:49:48
सूर्योदय	6:56:3
सूर्यास्त	17:46:28

घात चक्र

महीना	श्रावण
तिथि	3,8,13
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	भरणी
योग	वज्र
करण	तैतिल
प्रहर	1
चंद्र	12

पंचांग विवरण

तिथि	कृष्ण त्र्योदशी
योग	हर्षण
नक्षत्र	मूल
करण	गर

ज्योतिषीय विवरण

वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	मानव
योनि	स्वान
गण	राक्षस
नाड़ी	आदि
जन्म राशि	धनु
राशि स्वामी	गुरु
नक्षत्र	मूल
नक्षत्र स्वामी	केतु
चरण	4
युञ्जा	प्रभाग
तत्त्व	अग्नि
नामाक्षर	भी
पाया	ताम्ब्र
लग्न	धनु
लग्न स्वामी	गुरु

ग्रह स्थिति

ग्रह	वक्री	जन्म राशि	अंश	राशि स्वामी	नक्षत्र	नक्षत्र स्वामी	भाव
सूर्य	--	मकर	11:56:21	शनि	श्रावण	चन्द्र	दूसरा
चन्द्र	--	धनु	11:55:47	गुरु	मूल	केतु	पहला
मंगल	--	कुम्भ	06:36:40	शनि	धनिष्ठा	मंगल	तिसरा
बुध	--	धनु	24:27:43	गुरु	पूर्व षाढ़ा	शुक्र	पहला
गुरु	--	कुम्भ	03:56:28	शनि	धनिष्ठा	मंगल	तिसरा
शुक्र	हाँ	धनु	27:03:51	गुरु	उत्तर षाढ़ा	सूर्य	पहला
शनि	--	मीन	21:09:53	गुरु	रेवती	बुध	चौथा
राहु	हाँ	सिंह	18:34:33	सूर्य	पूर्व फाल्गुनी	शुक्र	नौवां
केतु	हाँ	कुम्भ	18:34:33	शनि	शतभिसा	राहु	तिसरा
लग्न	--	धनु	01:59:53	गुरु	मूल	केतु	पहला

सूर्य
मकर
श्रावण

योगकारक

चन्द्र
धनु
मूल

सम

मंगल
कुम्भ
धनिष्ठा

योगकारक

बुध
धनु
पूर्व षाढ़ा

हानिप्रद

गुरु
कुम्भ
धनिष्ठा

सम

शुक्र
धनु
उत्तर षाढ़ा

हानिप्रद

शनि
मीन
रेवती

हानिप्रद

राहु
सिंह
पूर्व फाल्गुनी

--

केतु
कुम्भ
शतभिसा

--

जन्म कुंडली

लग्न कुंडली

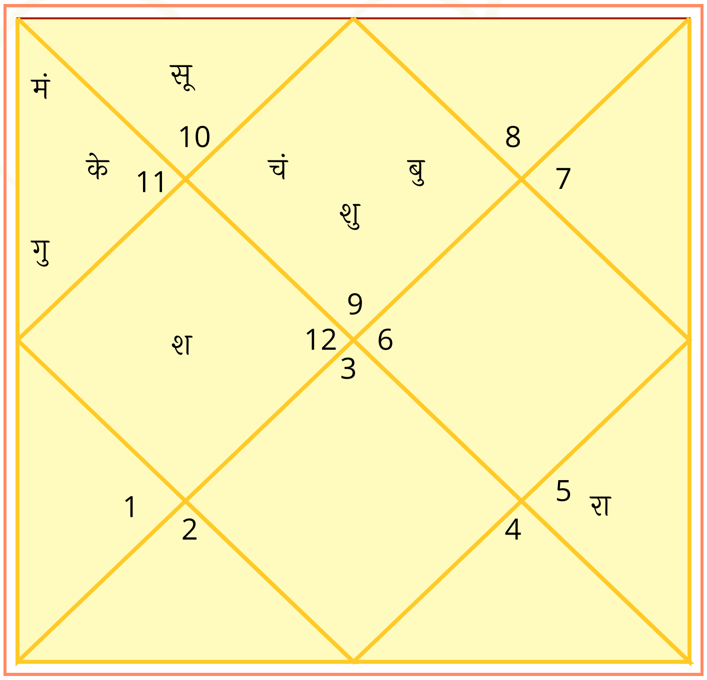

व्यक्ति के जन्म के समय आकाश में पूर्वी क्षितिज जो राशि उदित होती है, उसे ही उसके लग्न की संज्ञा दी जाती है। जन्म कुण्डली में 12 भाव होते है। इन 12 भावों में से प्रथम भाव को लग्न कहा जाता है। कुण्डली में अन्य सभी भावों की तुलना में लग्न को सबसे अधिक महत्व पूर्ण माना जाता है। लग्न भाव बालक के स्वभाव, रुचि, विशेषताओ और चरित्र के गुणों को प्रकट करता है।

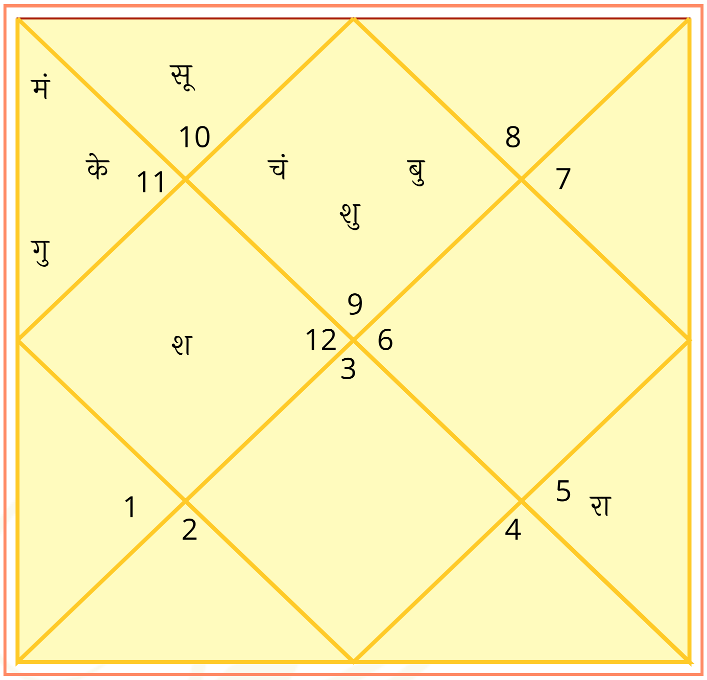

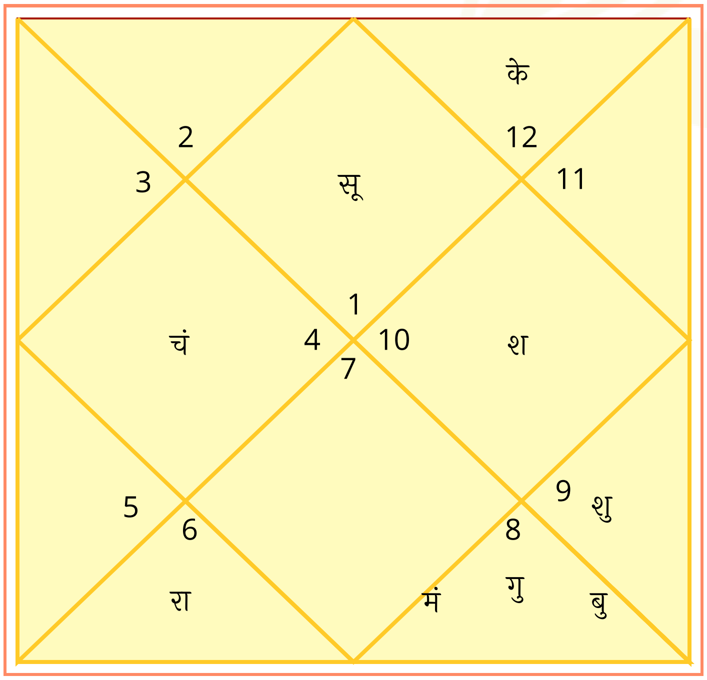

चंद्र कुंडली

लग्न कुंडली के बाद जिस राशि में चंद्रमा होता है उसे लग्न मानकर एक और कुंडली का निर्माण होता है जो चन्द्र कुंडली कहलाती है। चंद्र कुंडली का भी फलित ज्योतिष में लग्न कुंडली जितना ही महत्व है। लग्न शरीर, तो चंद्र मन का कारक है और वे एक दूसरे के पूरक हैं।

नवमांश कुंडली

नवांश कुण्डली को नौ भागों में बांटा जाता है, जिसके आधार पर जन्म कुण्डली का विवेचन होता है। नवांश कुण्डली में यदि ग्रह अच्छी स्थिति या उच्च के हों तो वर्गोत्तम की स्थित उत्पन्न होती है और व्यक्ति शारीरिक व आत्मिक रुप से स्वस्थ हो शुभ दायक स्थिति को पाता है।

भाव सन्धि

लग्न - 01:59:53 दशम भाव मध्य - 14:44:12

भाव	जन्म राशि	भाव मध्य	जन्म राशि	भाव संधि
1	धनु	01:59:53	धनु	19:07:16
2	मकर	06:14:39	मकर	23:22:02
3	कुम्भ	10:29:26	कुम्भ	27:36:49
4	मीन	14:44:12	मीन	27:36:49
5	मेष	10:29:26	मेष	23:22:02
6	वृष	06:14:39	वृष	19:07:16
7	मिथुन	01:59:53	मिथुन	19:07:16
8	कर्क	06:14:39	कर्क	23:22:02
9	सिंह	10:29:26	सिंह	27:36:49
10	कन्या	14:44:12	कन्या	27:36:49
11	तुला	10:29:26	तुला	23:22:02
12	वृश्चिक	06:14:39	वृश्चिक	19:07:16

चलित कुंडली

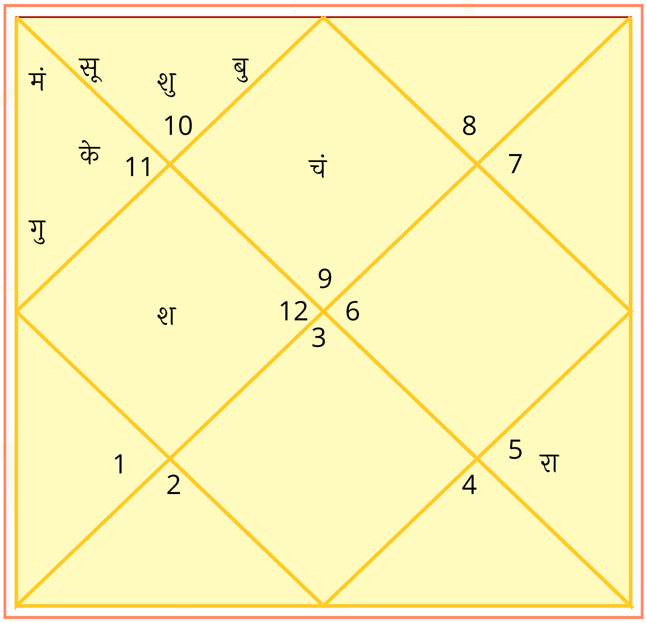

लग्न कुंडली का शोधन चलित कुंडली है, अंतर सिर्फ इतना है कि लग्न कुंडली यह दर्शाती है कि जन्म के समय क्या लग्न है और सभी ग्रह किस राशि में विचरण कर रहे हैं और चलित से यह स्पष्ट होता है कि जन्म समय किस भाव में कौन सी राशि का प्रभाव है और किस भाव पर कौन सा ग्रह प्रभाव डाल रहा है।